

बिहार में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना और सामाजिक न्याय की राजनीति: बाबू रासबिहारी लाल मंडल के योगदान का ऐतिहासिक पुनर्मूल्यांकन

डॉ. संजय कुमार सहनी

सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग

सब डिविजनल गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, बेनीपुर, दरभंगा (बिहार)

सारांश

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास-लेखन में अभिजनवादी दृष्टिकोण की प्रधानता के कारण अनेक क्षेत्रीय एवं पिछड़ी-जातीय पृष्ठभूमि से आए नेताओं के योगदान को समुचित अकादमिक स्थान नहीं मिल सका है। बिहार में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के आरंभिक निर्माताओं में बाबू रासबिहारी लाल मंडल (1866-1918) एक ऐसा ही उल्लेखनीय नाम है, जिन्हें 1908 से 1918 तक अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी (AICC) का सदस्य होने, बिहार-उड़ीसा कांग्रेस कमिटी के संस्थापकों में शामिल होने तथा पिछड़ी जातियों में राष्ट्रीय-राजनीतिक चेतना जगाने का श्रेय प्राप्त है। प्रस्तुत शोध आलेख उपलब्ध द्वितीयक एवं समकालीन शासकीय स्रोतों के आधार पर रासबिहारी लाल मंडल के राजनीतिक जीवन-विशेषतः 1899 के लखनऊ अधिवेशन से 1918 तक की उनकी निरंतर सक्रियता, 1910 में स्थापित गोप जातीय महासभा के माध्यम से सामाजिक-सांस्कृतिक अस्मिता की राजनीति, तथा 1912 के बांकीपुर (पटना) अधिवेशन में उनकी भूमिका-का विश्लेषण करता है। आलेख यह भी रेखांकित करता है कि किस प्रकार उनकी राजनीतिक विरासत उनके पुत्र बी.पी. मंडल के माध्यम से मंडल आयोग तक विस्तारित हुई, और यह प्रस्तावित करता है कि क्षेत्रीय इतिहास-लेखन में उपेक्षित इस अध्याय को अकादमिक मुख्यधारा में समुचित स्थान दिया जाना आवश्यक है।

कुंजी शब्द: रासबिहारी लाल मंडल, बिहार कांग्रेस, बांकीपुर अधिवेशन 1912, गोप जातीय महासभा, पिछड़ा वर्ग राजनीति, बी.पी. मंडल, मंडल आयोग, बिहार-उड़ीसा।

भूमिका

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास-लेखन की एक स्थायी सीमा यह रही है कि उसने मुख्यतः शहरी, अंग्रेजी-शिक्षित तथा उच्च जातीय पृष्ठभूमि से आए नेताओं के इर्द-गिर्द अपना विवरण केंद्रित किया, जिसके कारण दलित, आदिवासी और पिछड़ी जातियों से जुड़े अनेक नेताओं का योगदान इतिहास के हाशिये पर चला गया अथवा लगभग विस्मृत हो गया।¹ बिहार के संदर्भ में यह प्रवृत्ति विशेष रूप से उन क्षेत्रीय जमींदार-राजनेताओं के मामले में स्पष्ट दिखती है जिन्होंने बीसवीं सदी के आरंभिक दशकों में कांग्रेस के संगठनात्मक ढाँचे को गाँव-स्तर तक पहुँचाने में योगदान दिया, परन्तु जिन्हें उत्तरवर्ती राष्ट्रवादी इतिहास-लेखन में केवल फुटनोट भर की जगह मिली। बाबू रासबिहारी लाल मंडल (1866-1918), मधेपुरा (तब भागलपुर जिला, अब बिहार) स्थित मुरहो रियासत के जमींदार, इसी श्रेणी के प्रतिनिधि व्यक्तित्व माने जा सकते हैं।²

रासबिहारी लाल मंडल का ऐतिहासिक महत्व केवल इस तथ्य में नहीं है कि वे बिहार में कांग्रेस के संस्थापक सदस्यों में से एक थे, बल्कि इस बात में भी है कि वे अहीर (यादव) जाति से आने वाले, अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी तक पहुँचने

¹सुबाल्टर्न इतिहास-लेखन की आलोचनात्मक दृष्टि हेतु देखें: Ranajit Guha (ed.), Subaltern Studies: Writings on South Asian History and Society, Vol. I (Delhi: Oxford University Press, 1982), भूमिका।

²"Rash Bihari Lal Mandal," Wikipedia, https://en.wikipedia.org/wiki/Rash_Bihari_Lal_Mandal (अभिगमन तिथि 25 सितम्बर 2026); तथा Bihar and Orissa (India) Board of Revenue, Report on Wards', Encumbered, Trust and Attached Estates in the Province of Bihar and Orissa (Patna, 1912)।

वाले आरंभिक पिछड़ी-जाति नेताओं में परिगणित किये जाते हैं।³ उनके द्वारा 1910 में स्थापित गोप जातीय महासभा और उससे जुड़ा सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम, जिसमें प्रतीकात्मक रूप से यज्ञोपवीत धारण जैसे कर्मकांडीय दावे सम्मिलित थे, संस्कृतीकरण की उस व्यापक प्रक्रिया के अंग थे जिसके माध्यम से उन्नीसवीं-बीसवीं सदी में अनेक 'मध्यवर्ती' जातियाँ सामाजिक प्रतिष्ठा और राजनीतिक भागीदारी दोनों के लिए एक साथ संघर्ष कर रही थीं।⁴ इस अर्थ में रासबिहारी लाल मंडल का जीवन औपनिवेशिक भारत में राष्ट्रीय राजनीति और जातीय गतिशीलता की राजनीति के अंतर्संबंध को समझने की एक महत्वपूर्ण कड़ी प्रदान करता है।

शोध का उद्देश्य एवं पद्धति

प्रस्तुत आलेख के तीन प्रमुख उद्देश्य हैं: प्रथम, रासबिहारी लाल मंडल के राजनीतिक जीवन-वृत्त का ऐतिहासिक पुनर्निर्माण करना; द्वितीय, बिहार में कांग्रेस की संस्थागत स्थापना में, विशेषतः 1912 के बांकीपुर अधिवेशन में, उनकी भूमिका का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना; तथा तृतीय, उनकी राजनीतिक विरासत की उस निरंतरता को चिह्नित करना जो उनके पुत्रों के माध्यम से स्वतंत्र भारत की सामाजिक न्याय की राजनीति तक पहुँचती है। पद्धति की दृष्टि से यह आलेख ऐतिहासिक-विवरणात्मक तथा विश्लेषणात्मक पद्धति का अनुसरण करता है और इसके लिए उपलब्ध द्वितीयक स्रोतों—जैसे गौरीशंकर पी. अंबष्ठ की कृति 'फ्रीडम मूवमेंट एंड रोल ऑफ कांग्रेस लीडर्स'⁵, भूपेन्द्र 'मधेपुरी' की जीवनीपरक पुस्तक 'रासबिहारी लाल मंडल: पराधीन भारत में स्वाधीन सोच', तथा 27वें अखिल भारतीय कांग्रेस अधिवेशन (बांकीपुर, 1912) की मूल कार्यवाही-रिपोर्ट⁶—का उपयोग किया गया है। साथ ही समकालीन शासकीय अभिलेखों, जैसे बिहार-उड़ीसा राजस्व बोर्ड की रिपोर्ट (1912)⁷, का भी सन्दर्भ लिया गया है, जो मुरहो रियासत की प्रशासनिक स्थिति की पुष्टि करता है।

साहित्य समीक्षा

बिहार में कांग्रेस के प्रारंभिक इतिहास पर उपलब्ध अधिकांश साहित्य सच्चिदानन्द सिन्हा, मजहरुल हक, ब्रजकिशोर प्रसाद तथा राजेन्द्र प्रसाद जैसे उन नेताओं पर केंद्रित है जो कालांतर में स्वतंत्र भारत की राष्ट्रीय राजनीति में सर्वोच्च पदों तक पहुँचे।⁸ इसकी तुलना में जमींदार पृष्ठभूमि से आने वाले, परन्तु पिछड़ी जाति से संबद्ध नेताओं पर केंद्रित स्वतंत्र शोध अभी भी सीमित है। सुपूर्णा बैनर्जी और नंदिनी घोष द्वारा संपादित कृति में रासबिहारी लाल मंडल का उल्लेख यादव जातीय-संगठन के प्रारंभिक इतिहास के संदर्भ में हुआ है,⁹ जबकि अरुण सिन्हा की पुस्तक में उनका उल्लेख बी.पी. मंडल की पारिवारिक पृष्ठभूमि के प्रसंग में मिलता है।¹⁰ यह अंतराल इस बात की पुष्टि करता है कि रासबिहारी लाल मंडल पर केंद्रित कोई समय स्वतंत्र अकादमिक अध्ययन अभी उपलब्ध नहीं है, और प्रस्तुत आलेख इस रिक्तता को आंशिक रूप से भरने का एक विनम्र प्रयास है।

³Gouri Shankar P. Ambastha, *Freedom Movement and Role of Congress Leaders* (Delhi: Classical Publishing Company, 1995)।

⁴संस्कृतीकरण की अवधारणा हेतु देखें: M. N. Srinivas, *Social Change in Modern India* (Berkeley: University of California Press, 1966); तथा Supurna Banerjee and Nandini Ghosh (eds.), *Caste and Gender in Contemporary India: Power, Privilege and Politics* (London: Routledge, 2018), p. 117।

⁵Gouri Shankar P. Ambastha, *Freedom Movement and Role of Congress Leaders* (1995), पूर्वोक्त।

⁶Report of the Proceedings of the Twenty-Seventh Indian National Congress held at Bankipore on the 26th, 27th and 28th December 1912 (New Delhi: Indian National Congress, 1912), Gokhale Institute of Politics and Economics (GIPE) Digital Library, <http://hdl.handle.net/10973/17994>।

⁷Bihar and Orissa (India) Board of Revenue, *Report on Wards', Encumbered, Trust and Attached Estates in the Province of Bihar and Orissa* (Patna, 1912)।

⁸बिहार कांग्रेस के प्रारंभिक नेतृत्व पर शहरी-अभिजनवादी दृष्टिकोण की प्रधानता की चर्चा हेतु देखें: Arun Sinha, Nitish Kumar and the Rise of Bihar (New Delhi: Penguin Books India, 2011)।

⁹Supurna Banerjee and Nandini Ghosh (eds.), *Caste and Gender in Contemporary India: Power, Privilege and Politics* (2018), p. 117।

¹⁰Arun Sinha, Nitish Kumar and the Rise of Bihar (New Delhi: Penguin Books India, 2011)।

मुरहो रियासत और रासबिहारी लाल मंडल का प्रारंभिक जीवन

रासबिहारी लाल मंडल का जन्म 1866 में मधेपुरा (तत्कालीन भागलपुर जिला) में हुआ। वे मुरहो रियासत के अहीर जमींदार रघुवर दयाल मंडल के इकलौते पुत्र थे।¹¹ बाल्यावस्था में ही माता-पिता के देहावसान के पश्चात् उनका पालन-पोषण ननिहाल रानीपट्टी में हुआ।¹² उन्होंने ग्यारहवीं कक्षा तक औपचारिक शिक्षा प्राप्त की, परन्तु हिन्दी, उर्दू, मैथिली, संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी और फ्रेंच भाषाओं का ज्ञान अर्जित किया—यह बहुभाषिकता तत्कालीन बिहार के जमींदार वर्ग में अपेक्षाकृत असाधारण मानी जा सकती है।¹³ युवावस्था में ही उन्होंने मुरहो रियासत का प्रबंधन अपने हाथों में ले लिया। उनका विवाह सीतावती मंडल से हुआ, जिनसे उन्हें तीन पुत्र—भुवनेश्वरी प्रसाद मंडल, कमलेश्वरी प्रसाद मंडल और बिन्देश्वरी प्रसाद (बी.पी.) मंडल—प्राप्त हुए।¹⁴

अपने समकालीनों के बीच रासबिहारी लाल मंडल की छवि अत्यंत प्रभावशाली रही, और स्थानीय जनमानस में उन्हें आदरपूर्वक 'तिरहुत के राजा' कहकर पुकारा जाता था। बंगाल-विभाजन-विरोधी आंदोलन (1905) के समय उन्होंने 'भारत माता का संदेश' शीर्षक से एक पुस्तिका भी लिखी, जो उनके भीतर उभरती राष्ट्रवादी चेतना का प्रमाण है।¹⁵ उल्लेखनीय है कि ब्रिटिश-विरोधी सक्रियता के कारण उनके विरुद्ध एक सौ बीस से अधिक मुकदमे दर्ज कराए गए, जो उन्हें बिहार के उन कुछ जमींदारों में रखता है जिन्होंने अपनी सामाजिक-आर्थिक हैसियत को जोखिम में डालने के बावजूद उपनिवेशवाद-विरोधी राजनीति में सक्रिय भागीदारी की।¹⁶ यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है क्योंकि तत्कालीन बिहार के अधिकांश जमींदार वर्ग की राजनीतिक निष्ठा सामान्यतः ब्रिटिश प्रशासन के पक्ष में झुकी हुई थी, और इस पृष्ठभूमि में रासबिहारी लाल मंडल का राजनीतिक रुझान अपवादस्वरूप प्रतीत होता है।

कांग्रेस में प्रवेश और 1899 का लखनऊ अधिवेशन

रासबिहारी लाल मंडल की कांग्रेस-राजनीति में सक्रिय भागीदारी उन्नीसवीं सदी के अंतिम वर्षों में ही आरंभ हो गई थी। 1899 में रमेशचन्द्र दत्त की अध्यक्षता में सम्पन्न कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में वे स्वयं के साथ बिहार से एक बड़े प्रतिनिधि-मंडल का नेतृत्व करते हुए उपस्थित हुए, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उस समय तक कांग्रेस-जनों में उनकी पहचान सुस्थापित हो चुकी थी। इसी अधिवेशन में इंग्लैंड से उच्च शिक्षा प्राप्त कर लौटे डॉ. सच्चिदानन्द सिन्हा प्रथम बार सार्वजनिक रूप से सक्रिय हुए थे; समकालीन कांग्रेस-इतिहासकार पट्टाभि सीतारामय्या के विवरण के अनुसार, सिन्हा को अपने ओजस्वी एवं साहित्यिक भाषण-कौशल के लिए पहली बार यहीं व्यापक पहचान मिली।¹⁷ यह ऐतिहासिक विवरण—कि सुस्थापित रासबिहारी लाल मंडल की सहायता से ही नवागंतुक सिन्हा को कांग्रेस-व्यवस्था में समुचित प्रवेश तथा पहचान मिली—इस बात का संकेत देता है कि बिहार कांग्रेस के भीतर आरंभिक नेतृत्व-पदानुक्रम में मंडल का स्थान सिन्हा से भी वरिष्ठ था, यद्यपि उत्तरवर्ती इतिहास-लेखन में यह संबंध सामान्यतः विपरीत क्रम में ही प्रस्तुत होता रहा।

आगामी वर्षों में भी रासबिहारी लाल मंडल की उपस्थिति अखिल भारतीय मंचों पर निरंतर बनी रही। वे 1910 के इलाहाबाद अधिवेशन (25वाँ अधिवेशन) में बिहार के प्रतिनिधियों में सम्मिलित थे,¹⁸ तथा 1908 से 1918 तक निर्वाचित रूप से अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी और बिहार प्रांतीय कांग्रेस कमिटी—दोनों के सदस्य रहे।¹⁹ 1915 में पूना में गोपालकृष्ण

¹¹Bengal (India) Revenue Department, Report on the Administration of the Wards', Attached and Trust Estates (Calcutta, 1909)।

¹²भूपेन्द्र 'मधेपुरी', रासबिहारी लाल मंडल: पराधीन भारत में स्वाधीन सोच; तथा "औपचारिक रूप से मनाई गई रासबिहारी मंडल की पुण्यतिथि", दैनिक जागरण, मधेपुरा संस्करण।

¹³भूपेन्द्र 'मधेपुरी', रासबिहारी लाल मंडल: पराधीन भारत में स्वाधीन सोच, पूर्वोक्त।

¹⁴Gouri Shankar P. Ambastha, Freedom Movement and Role of Congress Leaders (1995); तथा "बाबू रासबिहारी लाल मंडल की पुण्यतिथि मनी", लाइव हिन्दुस्तान, 28 अगस्त 2020।

¹⁵भूपेन्द्र 'मधेपुरी', रासबिहारी लाल मंडल: पराधीन भारत में स्वाधीन सोच, पूर्वोक्त।

¹⁶Rupa Chatterjee, Reservation Policy: Mandal Commission and After (New Delhi: Sterling Publishers, 1992)।

¹⁷पट्टाभि सीतारामय्या, कांग्रेस का इतिहास (History of the Indian National Congress), भाग-1, लखनऊ अधिवेशन 1899 का प्रसंग।

¹⁸"India 2010: A Reference Annual," States and Union Territories: Bihar (New Delhi: Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting, Government of India, 54th ed., 2010), pp. 1118-1119।

¹⁹Gouri Shankar P. Ambastha, Freedom Movement and Role of Congress Leaders (1995), पूर्वोक्त।

गोखले की मृत्यु के अवसर पर आयोजित शोक-सभा में भी वे बिहार से गए अन्य सेनानियों के साथ उपस्थित थे, जहाँ लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने गोखले के जीवन-कार्य को आगे बढ़ाने का भावपूर्ण आह्वान किया था।

1912 का बांकीपुर (पटना) अधिवेशन और बिहार-उड़ीसा राज्य का गठन

वर्ष 1912 बिहार के इतिहास में दुहरे अर्थों में निर्णायक सिद्ध हुआ। एक ओर बंगाल प्रेसीडेंसी से पृथक होकर बिहार-उड़ीसा एक नए प्रशासनिक प्रांत के रूप में अस्तित्व में आया, तो दूसरी ओर उसी वर्ष 26 से 28 दिसंबर तक बांकीपुर (पटना) में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का 27वाँ वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ, जो बिहार में आयोजित होने वाला कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन था।²⁰ इस अधिवेशन की अध्यक्षता मध्य प्रांत (अमरावती) के राव बहादुर रघुनाथ नरसिंह मुधोलकर ने की, जबकि स्वागताध्यक्ष की भूमिका मौलाना मजहरुल हक ने निभाई।²¹ तेईस वर्षीय जवाहरलाल नेहरू, इंग्लैंड से हाल ही में लौटकर, इसी अधिवेशन में प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुए थे, जो इस अधिवेशन के ऐतिहासिक महत्व को और रेखांकित करता है।²²

इस अधिवेशन में बिहार से निर्वाचित होकर जिन प्रतिनिधियों को अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी में भेजा गया, उनमें रासबिहारी लाल मंडल, टेकारी के महाराजकुमार गोपाल शरण नारायण सिंह, डॉ. सच्चिदानन्द सिन्हा, ब्रजकिशोर प्रसाद, राय बहादुर गोपीकृष्ण सहाय, कटक के मधुसूदन दास, चौधरी करामत हुसैन, राजेन्द्र प्रसाद, महेश्वर प्रसाद, संत प्रसाद, एस.एम. इस्माइल तथा कुँवर नंदन सहाय के नाम उल्लेखनीय हैं। यह सूची इस बात की पुष्टि करती है कि बिहार कांग्रेस का आरंभिक नेतृत्व-ढाँचा सामाजिक दृष्टि से बहुविध था—इसमें जमींदार, विधिवेत्ता, व्यवसायी और विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि के व्यक्ति सम्मिलित थे—और इस बहुविधता में रासबिहारी लाल मंडल की उपस्थिति पिछड़ी जातियों के प्रतिनिधित्व का एक दुर्लभ किन्तु अत्यंत महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करती है।

गोप जातीय महासभा और सामाजिक-सांस्कृतिक अस्मिता की राजनीति

रासबिहारी लाल मंडल के राजनीतिक व्यक्तित्व का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि उन्होंने राष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय भागीदारी के साथ-साथ अपनी जाति-बिरादरी के सामाजिक उन्नयन के लिए भी संगठनात्मक प्रयास किए। 1910 में उनके द्वारा स्थापित गोप जातीय महासभा आगे चलकर अन्य क्षेत्रीय अहीर संगठनों के साथ विलय होकर अखिल भारतीय यादव महासभा के रूप में विकसित हुई।²³ इस महासभा के माध्यम से चलाया गया 'जनेऊ आंदोलन'—जिसमें यादव समुदाय के लिए क्षत्रियोचित कर्मकांडीय प्रतीकों, विशेषतः यज्ञोपवीत धारण के अधिकार का दावा किया गया—संस्कृतीकरण की उस सामाजिक प्रक्रिया का उदाहरण है जिसे समाजशास्त्री एम.एन. श्रीनिवास ने बीसवीं सदी के भारत में जातीय गतिशीलता के एक प्रमुख माध्यम के रूप में चिह्नित किया है। यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि रासबिहारी लाल मंडल यह सामाजिक-सांस्कृतिक संघर्ष उस समय चला रहे थे जब वे स्वयं भी राष्ट्रीय राजनीति के मंच पर ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती दे रहे थे—अर्थात् उनके लिए उपनिवेशवाद-विरोध और सामाजिक प्रतिष्ठा की राजनीति परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक ही व्यापक मुक्ति-परियोजना के दो अन्योन्याश्रित पहलू थे।

1911 में दिल्ली दरबार के अवसर पर, जब सम्राट पंचम जॉर्ज का राज्याभिषेक-समारोह आयोजित हुआ, रासबिहारी लाल मंडल को अन्य भारतीय नरेशों तथा राजे-रजवाड़ों के मध्य एक विशिष्ट स्थान प्रदान किया गया।²⁴ यह घटना विरोधाभासी प्रतीत हो सकती है—एक कट्टर कांग्रेसी को औपनिवेशिक शासन के सबसे भव्य राजकीय अनुष्ठान में सम्मानित स्थान—परन्तु यह वस्तुतः इस बात का प्रमाण है कि रासबिहारी लाल मंडल की सामाजिक हैसियत और प्रभाव इतना सुस्थापित हो चुका था कि औपनिवेशिक प्रशासन को भी उनकी राजनीतिक निष्ठा के बावजूद उनकी उपेक्षा करना संभव नहीं था।

²⁰Report of the Proceedings of the Twenty-Seventh Indian National Congress held at Bankipore (1912), पूर्वोक्त; तथा "Bankipore," Wikipedia, <https://en.wikipedia.org/wiki/Bankipore>।

²¹"Raghunath Narasinha Mudholkar," Wikipedia, https://en.wikipedia.org/wiki/Raghunath_Narasinha_Mudholkar।

²²"Bankipore," Wikipedia, <https://en.wikipedia.org/wiki/Bankipore> — इस प्रविष्टि में 1912 अधिवेशन में जवाहरलाल नेहरू की उपस्थिति का उल्लेख है।

²³Supurna Banerjee and Nandini Ghosh (eds.), *Caste and Gender in Contemporary India* (2018), p. 117।

²⁴Amberish K. Diwanji, "A Village that Symbolises Bihar," Rediff.com, February 2005 (मुरहो रियासत सम्बन्धी विशेष रिपोर्ट)।

1917 का कलकत्ता अधिवेशन, मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार और स्वशासन की मांग

1917 का वर्ष रासबिहारी लाल मंडल की राजनीतिक सक्रियता के शिखर-बिंदुओं में से एक रहा। 19 अक्टूबर 1917 को पटना में सैयद अली इमाम की अध्यक्षता में बिहार प्रांतीय संघ तथा बिहार-उड़ीसा कांग्रेस कमिटी की एक संयुक्त बैठक हुई, जिसमें कुल 41 सदस्यों ने भाग लिया, और जिसमें रासबिहारी लाल मंडल, सच्चिदानन्द सिन्हा तथा राजेन्द्र प्रसाद जैसे शीर्षस्थ नेता उपस्थित रहे। इस बैठक में भारत सचिव एडविन मॉन्टेग्यू के समक्ष प्रस्तुत किए जाने वाले संयुक्त स्मारपत्र के प्रारूपण हेतु 28 सदस्यों की एक उपसमिति गठित हुई, जिसमें रासबिहारी लाल मंडल के साथ मजहरूल हक, सच्चिदानन्द सिन्हा, दीप नारायण सिंह, सैयद अली इमाम तथा राजेन्द्र प्रसाद सम्मिलित थे।

इसी वर्ष कलकत्ता में सम्पन्न अखिल भारतीय कांग्रेस अधिवेशन (32वाँ अधिवेशन, अध्यक्षता एनी बेसेंट) में रासबिहारी लाल मंडल ने 'पूर्ण स्वशासन' की मांग को लेकर मुखर हस्तक्षेप किया, जिसके फलस्वरूप अधिवेशन ने यह प्रस्ताव पारित किया कि ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत स्वशासन के अतिरिक्त कोई भी अन्य सुधार भारतीय जनता को संतुष्ट नहीं कर सकता।²⁵ 1917 के अंत में मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड आयोग के समक्ष प्रस्तुत होने वाले प्रतिवेदन में बिहार की बहुसंख्यक पिछड़ी जातियों के समुचित प्रतिनिधित्व से संबंधित अखिल भारतीय यादव महासभा के शिष्टमंडल का नेतृत्व भी रासबिहारी लाल मंडल ने ही किया—यह घटना इस बात का प्रमाण है कि उनके लिए राष्ट्रीय स्वशासन की मांग और पिछड़ी जातियों के राजनीतिक प्रतिनिधित्व की मांग परस्पर पूरक थीं, विरोधी नहीं।

1918 में कलकत्ता के आगामी अधिवेशन के समय तक रासबिहारी लाल मंडल मधुमेह की गंभीर बीमारी से जूझ रहे थे तथा कलकत्ता के एक सुविख्यात चिकित्सक डॉ. सर्वाधिकारी से उपचार करा रहे थे। स्वास्थ्य अधिक बिगड़ने पर वे काशी (बनारस) चले गए, जहाँ 26 अगस्त 1918 को उनका देहावसान हुआ।²⁶ संयोगवश, उनके सबसे छोटे पुत्र बिन्देश्वरी प्रसाद (बी.पी.) मंडल का जन्म भी काशी में ही, पिता की मृत्यु से मात्र एक दिन पूर्व, 25 अगस्त 1918 को हुआ था—यह तिथि-संयोग बिहार की सामाजिक न्याय की राजनीति के इतिहास में एक प्रतीकात्मक सेतु के रूप में देखा जा सकता है।

वंश-परंपरा और सामाजिक न्याय की राजनीति की निरंतरता

रासबिहारी लाल मंडल की राजनीतिक विरासत उनके तीनों पुत्रों में भिन्न-भिन्न रूपों में आगे बढ़ी। ज्येष्ठ पुत्र भुवनेश्वरी प्रसाद मंडल 1924 में बिहार-उड़ीसा विधान परिषद के सदस्य निर्वाचित हुए; द्वितीय पुत्र कमलेश्वरी प्रसाद मंडल 1937 में बिहार विधान परिषद के सदस्य बने; तथा सबसे छोटे पुत्र बिन्देश्वरी प्रसाद मंडल—जो आगे चलकर बी.पी. मंडल के नाम से विख्यात हुए—बिहार के पहले पिछड़ा-वर्गीय मुख्यमंत्री बने और 1978-79 में केंद्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग (मंडल आयोग) के अध्यक्ष के रूप में वह ऐतिहासिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, जिसने 1990 में विश्वनाथ प्रताप सिंह सरकार द्वारा लागू किये गये अन्य पिछड़ा वर्ग आरक्षण की नींव रखी।²⁷ इस प्रकार रासबिहारी लाल मंडल से आरंभ हुई राजनीतिक-सामाजिक चेतना की एक धारा तीन पीढ़ियों तक विस्तारित होकर स्वतंत्र भारत की सामाजिक न्याय की राजनीति के सबसे निर्णायक अध्यायों में से एक तक पहुँचती है। यह पारिवारिक निरंतरता केवल वंशानुगत राजनीतिक भाग्य का उदाहरण नहीं है, बल्कि इस बात का भी प्रमाण है कि औपनिवेशिक काल में गठित पिछड़ी जातियों की राजनीतिक चेतना ने स्वतंत्रता-पूर्व और स्वतंत्रता-पश्चात भारत के बीच एक सैद्धांतिक तथा संगठनात्मक सेतु का काम किया।

इतिहास-लेखन में उपेक्षा: एक विश्लेषणात्मक टिप्पणी

यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि रासबिहारी लाल मंडल जैसे व्यक्तित्व, जिनकी अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी में एक दशक से अधिक की निर्बाध सदस्यता रही, तथा जिनकी उपस्थिति कांग्रेस के प्रत्येक महत्वपूर्ण अधिवेशन में दर्ज है, मुख्यधारा के राष्ट्रवादी इतिहास-लेखन में एक फुटनोट से अधिक स्थान क्यों नहीं पा सके। इसके कई संभावित कारण प्रस्तावित किये जा सकते हैं। प्रथम, स्वतंत्रता-पश्चात राष्ट्रीय इतिहास-लेखन की संरचना स्वाभाविक रूप से उन नेताओं के इर्द-गिर्द निर्मित हुई जो स्वतंत्र भारत में सर्वोच्च संवैधानिक पदों तक पहुँचे—जैसे राजेन्द्र प्रसाद अथवा सच्चिदानन्द सिन्हा—

²⁵भूपेन्द्र 'मधुपुरी', रासबिहारी लाल मंडल: पराधीन भारत में स्वाधीन सोच; तथा 1917 के कलकत्ता अधिवेशन की समकालीन कांग्रेस-कार्यवाही रिपोर्ट।

²⁶भूपेन्द्र 'मधुपुरी', रासबिहारी लाल मंडल: पराधीन भारत में स्वाधीन सोच, पूर्वोक्त; तथा "Rash Bihari Lal Mandal," Wikipedia, पूर्वोक्त।

²⁷भारत सरकार, पिछड़ा वर्ग आयोग (मंडल आयोग) प्रतिवेदन, 1980 के ऐतिहासिक सन्दर्भ हेतु देखें: Rupa Chatterjee, Reservation Policy: Mandal Commission and After (1992)।

जिससे उनके समकालीन, किन्तु उत्तरवर्ती संस्थागत राजनीति में सक्रिय न रह सके नेताओं की उपलब्धियाँ अपेक्षाकृत धूमिल पड़ गईं। द्वितीय, रासबिहारी लाल मंडल का देहावसान 1918 में ही, अर्थात् असहयोग आंदोलन के आरंभ से पूर्व ही हो गया, जिससे वे उस उत्तरवर्ती जन-आंदोलनकारी चरण का हिस्सा नहीं बन सके जिसने गांधीवादी इतिहास-लेखन में सर्वाधिक स्थान अर्जित किया। तृतीय, और सम्भवतः सर्वाधिक महत्वपूर्ण, यह कि जातिगत पूर्वाग्रहों से युक्त इतिहास-लेखन की व्यापक संरचना ने सामान्यतः उच्च-जातीय नेताओं के योगदान को केंद्रीय तथा पिछड़ी-दलित पृष्ठभूमि के नेताओं के योगदान को परिधीय मानने की प्रवृत्ति अपनाई—एक ऐसी प्रवृत्ति जिसकी ओर अनेक समकालीन सामाजिक-इतिहासकारों ने ध्यान आकृष्ट किया है।²⁸

इस संदर्भ में रासबिहारी लाल मंडल का पुनर्मूल्यांकन केवल एक व्यक्ति-विशेष के प्रति ऐतिहासिक न्याय की मांग नहीं है, बल्कि यह बिहार तथा भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के सामाजिक आधार की अधिक समावेशी और यथार्थपरक समझ विकसित करने का एक अवसर भी है। यह स्पष्ट करता है कि राष्ट्रीय आंदोलन कोई सजातीय, एकरेखीय प्रक्रिया नहीं था, बल्कि यह विविध सामाजिक समूहों—जमींदार और किसान, उच्च जाति और पिछड़ी जाति, शहरी बुद्धिजीवी और ग्रामीण नेतृत्व—के बीच निरंतर संवाद, सहयोग तथा कभी-कभी प्रतिस्पर्धा से निर्मित एक बहुस्तरीय संरचना थी।

निष्कर्ष

प्रस्तुत आलेख से यह स्पष्ट होता है कि बाबू रासबिहारी लाल मंडल बिहार में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की संस्थागत स्थापना के एक अत्यंत सक्रिय एवं प्रभावशाली सहभागी थे, जिनकी राजनीतिक यात्रा 1899 के लखनऊ अधिवेशन से आरंभ होकर 1918 में उनकी मृत्यु तक निर्बाध रूप से चलती रही। एक ओर उन्होंने अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी के सदस्य के रूप में स्वशासन तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता की मांग में योगदान दिया, तो दूसरी ओर गोप जातीय महासभा के संस्थापक के रूप में उन्होंने पिछड़ी जातियों की सामाजिक-सांस्कृतिक अस्मिता और राजनीतिक प्रतिनिधित्व की मांग को भी संगठित रूप दिया। उनकी यह दुहरी विरासत—राष्ट्रीय मुक्ति और सामाजिक न्याय की राजनीति का समन्वय—उनके पुत्र बी.पी. मंडल के माध्यम से मंडल आयोग तक विस्तारित हुई, जिसने स्वतंत्र भारत की सामाजिक-राजनीतिक संरचना को स्थायी रूप से प्रभावित किया। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय एवं स्थानीय अभिलेखों के गहन अध्ययन के माध्यम से रासबिहारी लाल मंडल जैसे नेताओं के योगदान को अकादमिक इतिहास-लेखन की मुख्यधारा में समुचित स्थान दिया जाए, जिससे भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की सामाजिक बुनियाद की एक अधिक संतुलित एवं समावेशी समझ विकसित हो सके।

संदर्भ सूची :-

- [1]. Ambastha, Gouri Shankar P. Freedom Movement and Role of Congress Leaders. Delhi: Classical Publishing Company, 1995.
- [2]. Banerjee, Supurna, and Nandini Ghosh, eds. Caste and Gender in Contemporary India: Power, Privilege and Politics. London: Routledge/Taylor & Francis, 2018.
- [3]. Bengal (India) Revenue Department. Report on the Administration of the Wards', Attached and Trust Estates. Calcutta, 1909.
- [4]. Bihar and Orissa (India) Board of Revenue. Report on Wards', Encumbered, Trust and Attached Estates in the Province of Bihar and Orissa. Patna, 1912.
- [5]. Chatterjee, Rupa. Reservation Policy: Mandal Commission and After. New Delhi: Sterling Publishers, 1992.
- [6]. Diwanji, Amberish K. "A Village that Symbolises Bihar." Rediff.com, February 2005.
- [7]. Guha, Ranajit, ed. Subaltern Studies: Writings on South Asian History and Society. Vol. I. Delhi: Oxford University Press, 1982.
- [8]. भारत सरकार। पिछड़ा वर्ग आयोग (मंडल आयोग) प्रतिवेदन। नई दिल्ली, 1980।
- [9]. Indian National Congress. Report of the Proceedings of the Twenty-Seventh Indian National Congress held at Bankipore on the 26th, 27th and 28th December 1912. New Delhi, 1912.
- [10]. मधेपुरी, भूपेन्द्र। रासबिहारी लाल मंडल: पराधीन भारत में स्वाधीन सोच। मधेपुरा, बिहार।
- [11]. Publications Division, Government of India. India 2010: A Reference Annual. 54th ed. New Delhi: Ministry of Information and Broadcasting, 2010.
- [12]. सीतारामय्या, पट्टाभि। कांग्रेस का इतिहास (History of the Indian National Congress)। भाग-1।
- [13]. Sinha, Arun. Nitish Kumar and the Rise of Bihar. New Delhi: Penguin Books India, 2011.

²⁸जातिगत पूर्वाग्रह से प्रभावित मुख्यधारा इतिहास-लेखन की आलोचना हेतु देखें: Ranajit Guha (ed.), Subaltern Studies, Vol. I (1982), पूर्वोक्त।

- [14]. Srinivas, M. N. Social Change in Modern India. Berkeley: University of California Press, 1966.
- [15]. "Rash Bihari Lal Mandal." Wikipedia. https://en.wikipedia.org/wiki/Rash_Bihari_Lal_Mandal.
- [16]. "Bankipore." Wikipedia. <https://en.wikipedia.org/wiki/Bankipore>.
- [17]. "Raghunath Narasinha Mudholkar." Wikipedia. https://en.wikipedia.org/wiki/Raghunath_Narasinha_Mudholkar.